रिकार्डः—किसने यह सब खेल रचाया..... ॐ पिताश्री 11/6/62

ओम शान्ति। परमपिता **P.** बैठ बच्चों को समझाते हैं कि मैं क्या कर रहा हूँ। यह भारत अभी काँटों का जंगल फॉरेस्ट है। सतयुग को कहा जाता है स्वर्ग, वैकुण्ठ अथवा देवी—देवताओं की दुनिया। 5000 वर्ष पहले यह भारत देवी—देवताओं का अर्थात् फूलों का गुलशन था। अभी काँटों का जंगल है। सरसों मिसल है और यह बागवान का दैवी गुलशन है। वो आसुरी दुनिया, यह दैवी दुनिया। आसुरी दुनिया में 3½ सौ करोड़ हैं। सरसों मिसल हैं। अभी तुम्हारा कलम लगा हुआ है। तुमको शूद्र से ब्राह्मण बनाया गया है। कनवर्ट किया गया है। बाबा क्या कर रहे हैं? भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। बाकी जो दुनिया है वो सभी अपना हिसाब—किताब खलास कर आत्माएँ मुक्तिधाम चली जावेंगी अथवा आत्माओं के झाड़ में चले जावेंगी। यह बड़ा ... है ना। अंश मात्र में हम आत्माएँ ब्रह्माण्ड में निवास करती हैं। उसको निर्वाणधाम कहा जाता। अगर कहें आत्मा **P.** में लीन हो जाती है तो फिर धाम नहीं कह सकते। तो अभी भारत को ज्ञान से गुल2 बनाए रहे हैं। तुमको विकर्माजीत बना रहे हैं। सतयुग में विकर्माजीत राजा भी कहा जाता है। विकर्म राजा का संवत अलग है। विकर्म करने वाले राजाएँ विकर्माजीत राजाओं, देवी—देवताओं को पूजन करते आए हैं। विकर्मी संवत को 5000वर्ष हुए। विकर्माजीत राजा को 5000वर्ष हुए फिर द्वापर से लेकर विकर्म शुरू होता है तो विकर्म राजा का संवत शुरू होता है। उनको 5000वर्ष हुए। तबसे अंधियार रात शुरू होती है। सतयुग को ब्रह्मा का दिन नहीं कहेंगे। वो फिर कृष्ण का दिन हो जाता है। तो रात कहेंगे ब्रह्मा की और दिन कहेंगे कृष्ण का। रात और दिन ज़रूर यहाँ ही होंगे। सूक्ष्मवतन में तो नहीं हो सकता। तो बाप समझाते हैं मैं क्या आकर करता हूँ। यह हार और जीत का खेल तो भारत पर ही है। भारत में ही डबल सिरताज देवी—देवताएँ थे। भारत में ही .... माइट ले रहे हो। फिर सतयुग में तुमको दोनों ताज मिलेंगे। पापात्माओं को कभी लाइट का ताज नहीं दे सकते। सन्यासी पवित्र बनते हैं तो उनको लाइट का ताज दिखाते हैं। अब बाप कहते हैं इस योग अग्नि से तुम्ह(रे) विकर्म विनाश होंगे और ज्ञान से विकर्माजीत राजा बनेंगे। इसको गीता का ज्ञान कहा जाता है। बाप कहते हैं मैं तुमको यह ज्ञान देकर फिर छुप जाता हूँ। मुझे कोई भी याद नहीं करते। देवताएँ त्रिकालदर्शी थोड़े ही हैं। तुमको जो त्रिकालदर्शी बनाते हैं उनको तुम अभी याद करते हो। मनुष्य को त्रिकालदर्शी बना न सके। ईश्वर सर्वव्यापी कहने से फिर रचयिता और रचना की नॉलेज तो हुई नहीं। ईश्वर सर्वव्यापी है बस, यही ज्ञान हुआ। यह तो मनुष्य को देवता बनाने का ज्ञान है। बाप कहते हैं मैं इस समय आप बच्चों को श्रृंगार कर फिर गुम हो जाऊँगा। फिर यह ज्ञान न देवताओं में, न क्षत्रियों में, न वैश्य, शूद्रों में रहेगा। फिर मैं ही आकर शूद्र से ब्राह्मण बनाऊँगा। अब तुम शूद्र से ब्राह्मण बने हो। फिर देवता बनेंगे। जो शूद्र धर्म से ब्राह्मण धर्म में आवेंगे वो ही सिकीलधे राज्य—भाग्य लेंगे। यह पाठशाला है जहाँ पाठ पढ़ाया जाता है। भगवान द्वारा भगवती—भगवान बनना है। उनको भिन्न2 नामों से सभी याद करते हैं। फिर उसको सर्वव्यापी कहना गोया सभी नास्तिक हो जाते। बाप के आक्युपेशन को पूरा जानना चाहिए ना। बाप ही अपना परिचय बता सकते हैं। शादी करने के बाद जब बाप बनते हैं तो फिर क्रियेशन शुरू हो जाती है। कहेंगे मेरी स्त्री, मेरे बच्चे। यह कौन कहता है? आत्मा। अभी बेहद का बाप फिर कहते हैं यह मेरी सारी सृष्टि रचना है। मैं भारतवासियों को बेहद की राजाई देता हूँ। वहाँ एक ही राजधानी, एक ही भाषा चलती है। यथा राजा—रानी तथा प्रजा सभी सुखी रहती है। यहाँ तो बीमार रोगी बनते रहते हैं ना। क्या सन्यासी बीमार नहीं होते? ज़रूर कर्म ऐसे किये हुए हैं तब तो बीमार पड़ते हैं। अभी बाबा तुमसे ऐसे कर्म कराते हैं जो फिर 21 जन्म कोई कर्म विकर्म न बने। यह ड्रामा का राज़ भी समझना है। ऐसे नहीं कि स्वर्ग, नर्क यहाँ है जो सुख में है वो गोया स्वर्ग में है, जो दुख में है वो नर्क में है। भला विकर्म कौन कराते हैं। मनुष्य तो कुछ भी समझते

नहीं। फिर कह देंगे सब कार्य ईश्वर ही करते हैं। अच्छा, ईश्वर ने सबकुछ दिया, ईश्वर ही फिर लेते हैं, तो रोते क्यों हो। अभी तुम जानते हो यह सारी सृष्टि खत्म होने वाली है। तुम अपने भविष्य 21 जन्म लिए प्रालब्ध बना रहे हो। अभी तुम हो संगम पर। सतयुग आने वाला है। कलियुग को तुम छोड़ बैठे हो। न इधर, न उधर हो। हमारा बुद्धियोग अभी नहीं है। हम ¾ पूरा करके आय हैं। हाँ, टाइम क्यों लगता है; क्योंकि विकर्मों का बोझा बहुत है। योगबल से ही विकर्म विनाश होंगे। **J.J.** का बोझा है ना।

तो बाप समझाते हैं हम क्या करते हैं। नई सृष्टि रचते हैं। सृष्टि तो है; परन्तु उनको पुरानी से नई बनाना है। सृष्टि खलास नहीं होती। इसलिए पुरानी सृष्टि पुराने तन में आती है। यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म। तमोप्रधान का भी अन्त कहेंगे। पतित शरीर है। यह भी उनसे सुनता है। यह कोई अपन को भगवान वा कृष्ण आदि तो कहते नहीं। मनुष्य उल्टा क्या .... बोलते रहते हैं। यह भी ड्रामा की नूँध है। कल्प पहले यह सभी हुआ था। ज्ञान यज्ञ में असुरों के विघ्न पड़े थे। पाप का घड़ा भरा था सो अब भी होगा। बाप बच्चों को आए सदा सुखी बनाते हैं। उनको ही श्री2 अर्थात् श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ कहा जाता है। देवताएँ जो श्रेष्ठ हैं उनसे भी श्रेष्ठ वो है श्री श्री108। जगत गुरु उनको कहते हैं। उनकी ही माला जपते हैं। ऊपर में है (शिव) और जिन्होंने सर्विस की है उन 108 की माला है। उनमें भी 8 .... होते हैं। 9 रत्न कहते हैं ना। एक शिवबाबा और बाकी 8 रत्न हैं। सूर्यवंशी 8 पीढ़ी बनती है। 8 को बनाने वाला कौन? बाबा। फिर उनकी मल्टीपिकेशन है 16,108। तो बाबा राजधानी स्थापन करके स्वर्ग बनाए फिर गुम हो जावेगा। सबकुछ करके अपना पार्ट बजाय फिर छुप जाते हैं। ..... पर जो माया आए छिड़की है उनको बाबा आकर जगाते हैं। आत्मा आयरन एज्ड बिल्कुल झुंझार हो जाती है। अभी सभी की ज्योत उझयाई हुई है। फिर आकर जगाते हैं। तमोप्रधान मनुष्य जो नर्क में पड़े हैं वो फिर अपन को श्री श्री 108 जगतगुरु बैठ कहलाए तो पापात्मा ठहरी ना। ऐसे का ही बाबा ने नरसिंह रूप से विनाश कराया। बाकी और कोई बात नहीं है। नर–नारी को शेर बनाते हैं। सुख ..... की गजगोर करते हैं। बाकी भ... आदि में निकलने की बात नहीं है। यह तो गुड़ियों के खेल है। बहुत बनाए हैं। वास्तव में है सभी फालतू। बाबा है मूलवतन वासी। ब्र॰वि॰शं॰ सूक्ष्मवतन वासी और आदिदेव–आदिदेवी, ल॰ना॰, राम–सीता वहाँ हुए हैं। बस, बाकी न हनुमान, न गणेश आदि हैं। यह सभी गुड़ियों के खेल बैठ बनाए हैं। यहाँ तो है पढ़ाई। भगवान सहज ज्ञान, सहज योग सिखलाते हैं। भक्तिमार्ग तो बहुत बड़ा है। थुर छोटा होता है। झाड़ बड़ा होता है ना। भक्तिमार्ग का प्रस्ताव बहुत है। किस्म2 की मत है। कोई किसको मानेंगे, कोई किसको मानेंगे। अनेक मत–मतांतर हैं। इसलिए मंत्र पड़े हैं। बाप आए सभी वेद–शास्त्रों, सतोप्रधान सन्यास और रजो, तमोप्रधान सन्यास सभी का राज़ समझाते हैं। सन्यासियों का रजोप्रधान सन्यास कहा जाता है। भारत को कुछ न कुछ मदद करते हैं। तुम्हारा है सतोप्रधान सन्यास। दिखलाते हैं गोवर्धन पर्वत उठाया। पत्थर के पर्वत से सोने का हो गया। कहाँ की बात कहाँ ले गए हैं। बाबा बैठ समझाते हैं वास्तव में पूजा किसकी होनी चाहिए। पूजा तो संगमयुग वालों की होनी चाहिए। यह हम भारत को सोना बनाते हैं। वहाँ घी की नदियाँ बहुत रहती, हीरों–जवाहरों के महल रहते हैं। अभी अमेरिका कितना साहुकार है। साइंस का कितना घमंड है। सुख भी इन साइंस से मिलता है। मौत भी इन साइंस से होता है। अमेरिका पास तो अनगिनत पैसे हैं। कितना भारत को देते हैं। तुम जानते हो यह उन्हों की रिटर्न सर्विस है। भारत को बहुत लूटा है ना। क्रिश्चियन्स और कृष्ण का आपस में लेन–देन का हिसाब है। फिर बाबा उन्हों का विनाश कर मक्खन तुमको दे देते हैं। कृष्ण के ....ख में वैकुण्ठ की बादशाही देखते हैं ना। अभी तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा प्रैक्टिकल में आया हुआ है। सुप्रीम सोल ज़रूर कोई शरीर में आया होगा ना। यह किसको पता नहीं। (एक लाइन मिटी हुई है।.....

.....

.....

शिव के मंदिर बनाए हैं। उनकी जयन्ती मनाते हैं तो ज़रूर आया होगा ना। ब्र॰वि॰शं॰ की भी भारत में है। सोमनाथ का मंदिर भी है। बाबा कहते हैं मैं इन द्वारा आए सोमरस पिलाता हूँ। जि(स)से तुम मनुष्य से देवता बनते हो। बाबा कलश देते हैं माताओं को। यह माताएँ भारत को स्वर्ग बनाती हैं। इसलिए बाप भी कहते हैं वन्दे मात्रम्। मैं उन्हों को अनसूया कुन्तियाएँ बनाता हूँ। तुम कुन्तियाँ हो जो शिवबाबा का आह्वान करते हो। कन्याओं–माताओं को स्वप्न में बाल–लीला दिखलाते हैं। शिवबाबा कितना अच्छी रीत समझाते हैं। मेरे को दूध, अक के फूल, मक्खन आदि क्यों चढ़ाते हैं। कृष्ण तो कभी ...हाँ आ न सके। कृष्ण का जन्म ही सतयुग में है। कृष्ण की आत्मा ही पुनर्जन्म लेती रहती है। कृष्ण की आत्मा जन्म लेती है, उनका बैठ बतलाते हैं। तो सभी नम्बरवार ऐसे जन्म लेते हैं। पीछे आने वाले दूसरे धर्म वालों के जन्म थोड़े होंगे। बुद्धि में सारे ड्रामा को भी याद रखना है। यहाँ भी तुम देखते हो हमारी यादगार खड़ी है। वहाँ पत्थर की काली मूर्ति है और अचल घर में सोने की मूर्ति रखी है। राजयोग से पत्थर से पारस बने हैं। पूर्ण यादगार है। नाम बहुत रख दिये हैं। ब्रह्मा को अनेक भुजाएँ दी हैं। है तो ... ना। 4 भुजा वाला मनुष्य होता नहीं है। सतयुग का प्रिन्स भी दो भुजा वाला था जैसे बच्चे होते हैं। यह है गुप्त सेना। किसको पता थोड़े ही है। भारत की राजधानी स्थापन हो रही है। नई दुनिया से नये देवी–देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। जो गाँधी जी पुरुषार्थ करते थे; परन्तु कर थोड़े ही सका। कहते हैं पत्थर2 में वो भगवान है, फिर तो पत्थर से माथा फोड़ो। भगवान कहते मुझे रुलाए दिया है। मैं तो जन्म–मरण रहित हूँ। मैं न सूक्ष्म, न स्थूल शरीर धारी हूँ। सभी क्लीयर लिखा पड़ा है; परन्तु कोई अच्छी तरह समझते हैं, कोई उल्टे–सुल्टे प्रश्न पूछते हैं। अनेक प्रकार की मत है (एक लाइन मिटी हुई है)..... ..... मिलकर आते हैं तो एक2 को अलग समझाना चाहिए; क्योंकि हरेक की अलग2 मत है। दूसरी मत वाला आकर बैठा होगा तो हैरान कर देंगे। लॉ ऐसे कहते हैं। हरेक को अलग समझाना अच्छा है। फिर जो अच्छा समझने वाला होगा वो चटक जावेगा। यहाँ तुम सभी की मत एक है। इसको कहा जाता है अद्वैत मत। देवता बनने की मत। बाकी सभी है आसुरी मत। तुमको परमपिता प॰ से श्रीमत मिलती है। वो पानी के बादल भरकर जाय वर्षा करते हैं। तुम हो ज्ञानामृत के बादल। सागर पास आवे ही ऐसे जो भरकर फिर वर्षा बरसावें। नहीं तो इतना पद न पावेंगे। अपनी प्रजा न बनावेंगे। तो राजधानी कैसे बनावेंगे। यह है परमपिता प॰ शिव के देवी–देवता धर्म स्थापना की मशीन। जो देवता धर्म की टाँग टूटी हुई है। बाकी तो सभी धर्म हैं। बाबा फिर वो टाँग स्थापना करके और टाँगे तोड़ डालेंगे। शिवबाबा महादानी कितना मालामाल बनाते हैं सहज ज्ञान और सहज योग से। ज्ञान रत्न लेकर दान करना है फिर उनमें हैं नम्बरवार। जो ब्राह्मण बनेंगे वो ही स्वर्ग के मालिक बनेंगे। फिर चाहे राजा बने, चाहे प्रजा बने। जितना पुरुषार्थ करेंगे। अच्छा, ॐ

आज दिल्ली कृष्णानगर की पार्टी और गुड़गांव की पार्टी रिफ्रेश हो गई और आज फिर सहारनपुर से भगवती 12 की पार्टी ले आई है। फाज़लका से भी सावित्री 10/12 की पार्टी ले आई हुई है और सीमाऊ फिरोजाबाद से भी पार्टी आई हुई है।

(तीन लाइन मिटी हुई हैं)..... ....।